श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

श्री कृष्ण प्रणामी धर्माचार्य अनन्तश्री विभूषित जगद्गुरु आचार्य श्री कृष्णमणिजी महाराजश्रीके जन्म दिन पर सन्तगुरुजनों द्वारा माल्यार्पण ।

वर्ष: ९३ जनवरी २०२१ अंक : १

श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर

www.krishnapranami.org

दीपावलीके पावन पर्व पर समर्पित १०८ राजभोग । सौजन्य-परमधामवासी पशीवेन माधाभाई पटेलकी स्मृतिमें-लीलाबेन भोगीभाई पटेल परिवार (मूल-मोयद, सा.का.) हाल-अमेरिका ।

२ परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके जन्मोत्सव प्रसंग पर आयोजित सत्संग सभाके दृश्य ।

श्रीकृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

संस्थापक : ब्रह्मलीन आचार्य श्री १०८ धनीदासजी महाराज

वि . सं : २०७७ | निजानन्दाब्द : ४३९ | बुद्धजी शाका : ३४२

वर्ष : ९३ | **जनवरी २०२१** | **अंक : ०१**

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वामित्व } जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज

मुद्रण एवं प्रकाशन स्थल } श्री ५ नवतनपुरी धाम खीजड़ा मन्दिर जामनगर – ३६१ ००१ (गुजरात) भारत

सम्पादक : स्वामी श्री लक्ष्मणदेवजी महाराज
श्री कनकराय व्यास

पता : श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका, श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर 361 001

फोन : (0288) 267 2829 मो : 08511226600

E-mail : patrika@krishnapranami.org / navtanpuri@gmail.com

Website : www.krishnapranami.org / patrika

श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

धर्मप्राण सुंदरसाथजी, बहुत आनन्दका विषय है कि आप और हम सभीकी अपनी ''**श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका**''ने ९२ वसन्त पार कर इस महिनेसे ९३ वें वसन्तमें प्रवेश किया है। हम सभी समझ सकते हैं कि ९२ वर्ष कोई छोटा समय नहीं होता है। इतनी लम्बी अवधि (चार–चार पीढी) तक सुंदरसाथकी सेवाके लिए जुटे रहना अपने आपमें बहुत बडी बात होती है।

वस्तुतः श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिकाकी साहसिक सफलताके लिए आप सभी सुन्दरसाथ ही धन्यवादके पात्र हैं क्योंकि आपका प्रेम और अपने पनसे ही पत्रिकाने हम सभीकी इतनी अच्छी सेवा की है।

हमें विश्वास है आपका प्रेम, साथ एवं सहयोग इसी प्रकार प्राप्त होते रहेंगे तो आगामी समयमें भी समस्त सुन्दरसाथके घर–घरमें पहुँचती रहेगी एवं मार्गदर्शन प्रदान करती रहेगी।

संपादकीय

अन्धकार है जहाँ आदित्य नहीं है,
मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं है ।

साहित्य उसे कहते हैं जिससे समाजका हित होता हो जिसकी रचना समाजके हितके लिए की गई हो ''हितेन सहितम्''। प्राचीन समयसे हि सनातन संस्कृति साहित्यिक दृष्टिसे बहुत ही समृद्ध है। आदि ग्रन्थ वेदसे लेकर उपनिषद्, रामायण, महाभारत, पुराणादि जो सर्वकालीन एवं सर्व व्यापक साहित्य है यही सनातन धर्म एवं सस्कृतिका आधार है। जिनकी रचनाका मूल केन्द्रविन्दू समाजका हित है।

समग्र साहित्यका एक ही लक्ष्य है मनुष्य आज जहाँ पर खड़ा है वह वहाँसे और आगे बढ़े। जिसके पास जितना ज्ञान उपलब्ध है, वह उससे और अधिक ज्ञानार्जन करे। जीवनको और अधिक उज्ज्वल एवं उन्नत बनायें। हमें गौरव है कि हमारी प्राचीन परंपरा साहित्यक दृष्टिसे भी सबसे संमृद्ध है।

किसी भी देश, जाति या समाजकी पहिचान उसके साहित्यसे होती है । साहित्य संस्कृतिकी प्रज्ज्वलित मशाल है । साहित्य एवं समाजका अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। साहित्यमें तत्कालीन समाज एवं राष्ट्रका प्रतिविन्ब होता है। किसी भी व्यक्ति, समाज या राष्ट्रको गहराईसे समझना हो तो वहाँके साहित्यको समझना चाहिए । किसके पास किस प्रकारके साहित्य हैं उससे उसकी मानसिकता मापी जा सकती है । उसको भली प्रकारके समझा जा सकता है। इसीलिए कहते हैं साहित्य समाजका दर्पण है।

सत्साहित्यको समाजकी आत्मा भी कहा जाता है। सत्साहित्यमें व्यक्ति एवं समाजको प्रभावित करनेके साथ साथ उसे उन्नत बनानेकी अपार शक्ति एवं क्षमता सन्निहित होती है।

सुन्दरसाथजी, श्री कृष्ण प्रणामी संप्रदाय भी साहित्यक दृष्टिसे संमृद्ध है। महामति श्री प्राणनाथजीके समयसे लेकर वर्तमान पर्यन्त संप्रदायमें अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थोंकी रचना हुई हैं। जिनसे समाजको ज्ञानकी दिव्य आभा संप्राप्त हुई है, हो रही है और आगे भी होगी । सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजसे

महामति श्री प्राणनाथजीने श्रुत परंपरा द्वारा ज्ञानार्जन किया । महामतिजीने सद्गुरु द्वारा अनुप्राप्त ब्रह्म ज्ञानको अपने शिष्यों द्वारा लिपिबद्ध करवाकर सभी सुन्दरसाथजीके लिए सुलभ करवाया ।

स्वयं महामति श्री प्राणनाथजीने श्री तारतम सागरकी रचना की । श्री प्राणनाथजीके समकालीन एवं परवर्ती अनेक संतोंने वीतक साहित्यकी रचना की । उसके बादके अनेकानेक संतजन एवं विद्वद्जनोंने भी संप्रदायके साहित्य भण्डारको संमृद्ध बनानेका महद् कार्य किया ।

इसी श्रृंखलामें ब्रह्मलीन आचार्य श्री १०८ धनीदासजी महाराजश्री द्वारा वि.सं १९८४ में संस्थापित श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका, समाजकी प्रथम पत्रिका है । गत ९३ वर्षोंसे यह पत्रिका अविरल गतिसे सुन्दरसाथको भक्ति, ज्ञान एवं वैराग्यका पाठ पढ़ा रही है ।

सुज्ञ एवं जिज्ञासु पाठकवृन्दके साहित्य प्रतिके प्रेमके कारण ही श्री कृष्ण प्रणमी धर्म पत्रिकाने इतने दीर्घकाल पर्यन्त समाज एवं सुन्दरसाथकी सेवा की है । आगे भी आप सभीके प्रेम, सेवा, श्रद्धा एवं समर्पण द्वारा ही पत्रिका जीवंत रहेगी ।

सुन्दरसाथजी, आप सभीको विदित है, गत वर्ष मार्च २४ से कोरोनाके कारण समग्र देशमें पूर्ण लकडाउन हुआ । जिसके चलते अनेक महिनों पर्यन्त सब कुछ कार्य बन्द हो गये । इसका प्रभाव पत्रिकाके ऊपर भी पड़ा । हम पत्रिकाको आपकी सेवामें समर्पित नहीं कर पाये । यद्यपि कतिपय अंक हमने ई पत्रिकाके रूपमें तैयार कर सुन्दरसाथकी सेवामें नेट थ्रु प्रेषित भी किया, तथापि गत वर्ष अप्रैलसे लेकर दिसम्बर पर्यन्त पूर्ववत् हार्ड कपिके रूपमें आपकी सेवामें पत्रिका नहीं पहुँचा पाये इसका हमें खेद है । परन्तु अब नयें वर्षके साथ साथ पुनः पूर्ववत् पत्रिका आपकी सेवामें समर्पित है । आप सभी इससे लाभान्वित होंगे । हमें विस्वास है आप सभी पूर्ववत् पठन एवं लेखनका आनन्द प्राप्त करेंगे ।

सभीको नूतन वर्षकी मंगलकामनाके साथ प्रेम प्रणाम ।

– स्वामी लक्ष्मणदेवजी महाराज

आत्म जागृतिका सुख

जगद्गुरु आचार्यश्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज

महामति श्री प्राणनाथजी प्रणीत '**श्री तारतम सागर**' के अन्तर्गत कलश ग्रन्थ मुख्यतः जागनी ग्रन्थ है उसमें भी अन्तिम दो प्रकरण जागनीके प्रकरण माने गये हैं । यहाँ पर जागनीका तात्पर्य आत्म जागृतिसे है । वास्तवमें जागृत आत्मा ही आनन्दका अनुभव कर पाती है अन्यथा प्रसुप्त चेतनाको मात्र सुखका ही आभास रहता है । जागनीका उपदेश प्राचीन कालसे ही हो रहा है । कठोपनिषद्का वाक्य, **उत्तिष्ठतः जागृतः प्राप्य वरान्निबोधतः** आत्म जागृतिका ही उपदेश दे रहा है । यहाँ पर उठने और जागनेकी बात की गयी है । इसका तात्पर्य यह है कि सर्व प्रथम उठना होगा तत्पश्चात् जागृति आयेगी । जीवनका अभ्युदय ही उठना है । उठनेके पश्चात् ही निश्रेयससिद्धि होगी । महर्षि कणादने धर्मकी परिभाषा समझाते हुये कहा है, '**यतोभ्युदयनिश्रेयससिद्धिः स धर्मः**' जिससे जीवनका अभ्युदय अर्थात् उत्थान हो एवं निश्रेयससिद्धि अथात् आत्मजागृति हो वह धर्म है । कठोपनिषदका उक्त उपदेश धर्मकी परिभाषा ही है । इससे यह स्पष्ट होता है कि उठना और जागना ही जीवन है अन्यथा मानव होते हुये भी मानव और पशुमें कोई अन्तर नहीं रहेगा मात्र धर्मके आधार पर ही मानव और पशुमें अन्तर माना गया है । धर्मका मुख्य ध्येय आत्म जागृति है ।

महामति श्री प्राणनाथजीने कलश ग्रन्थके प्रारंभमें निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराजको हुए पूर्णब्रह्म परमात्माके प्रत्यक्ष दर्शनके प्रसंगका उल्लेख किया है । उस समय श्रीदेवचन्द्रजीको परमात्माने पूछा, **तुम कौन हो, तुम्हें इस जगतमें क्यों आना पड़ा, तुम्हारा घर कहाँ है, तुम्हारे स्वामी कौन हैं, तुम जाग रहे हो या नींदमें हो ? इन बातोंको दृढ़तापूर्वक कहो ।** वास्तवमें ये पाँच प्रश्न ही जागनीके आधार हैं । उनमें अन्तिम प्रश्न है, **तुम जागृत अवस्थामें हो या नींदमें ?** यह विचारणीय है । हम यह कैसे समझें कि वास्तवमें हम जागृत अवस्थामें हैं या नींदमें हैं ? इसके लिए इन्हीं प्रश्नोंपर विचार करना अति आवश्यक है ।

सर्व प्रथम हमें यह ज्ञात होना चाहिए कि हम कौन है ? क्या हम शरीर हैं, प्राण हैं, इन्द्रियाँ हैं, मन हैं, बुद्धि हैं या और कोई ? इस पर चिन्तन करने पर हमें ज्ञात होगा कि न हम शरीर हैं, न प्राण हैं, न इन्द्रियाँ हैं, न मन हैं और नहीं बुद्धि हैं ? अपितु इन सबसे परे चैतन्य स्वरूप आत्मा हैं । हम स्वयं आत्मा हैं और यह संपूर्ण शरीर, प्राण, इन्द्रियाँ, मन बुद्धि आदि सहित हमारा साधन है । हमारे होने पर इसका अस्तित्व है इस रहस्यको जान कर, समझकर आत्माका अनुभव करना होगा । मात्र जानकारी पर्याप्त नहीं है । आत्माका अनुभव होनेपर यह भी अनुभव होगा कि आत्मायें नश्वर जगतमें क्यों आती हैं ? वास्तवमें ब्रह्मात्मायें नश्वर जगतमें नहीं आती हैं मात्र उनकी सुरता अर्थात् मनोवृत्ति ही नश्वर जगतका खेल देखती हुयी अपने अस्तित्वको भूल गयी हैं । इस विस्मृतिके कारण ही ब्रह्मात्माओंको परमधाम मूलमिलावामें श्री राजजीके समक्ष होते हुए भी न परमधामका ज्ञान रहा, न ही श्री राजजीका । अब जागृत होकर इस तथ्यको समझना है । इसके लिए ही तारतम्य ज्ञानका अवतरण हुआ है । तारतम्य ज्ञान आत्म जागृतिके लिए है ।

जागृत होनेपर यह भी ज्ञात होगा कि ब्रह्मात्मायें ब्रह्मधाममें लीलायें करती हैं । नश्वर जगतमें सुरताके रूपमें आनेपर भी उन्होंने व्रज, रास और जागनी लीलायें कीं । ये लीलायें श्री राजश्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंकी हैं । इसलिए इनको ब्राह्मीलीला कहा है । परमधामकी ब्राह्मी लीलाको निजलीला भी कहा है । श्री राजश्यामाजीके साथ होने पर नश्वर जगतमें भी उन्हें परमधामका ही सुख अनुभव हुआ । उस समय उन्हें यह ख्याल नहीं रहा कि परमधामकी लीलायें इनसे भिन्न हैं । वे इन्हीं लीलाओंमें मस्त हो रही थीं । उस समय उन्हें उन लीलाओंके अतिरिक्त कुछ भी ख्याल नहीं था । कहा भी है,

पेहेले दृष्टें जो हमारे आइयाँ, तेते मिने उजास ।
हम खेले तिन उजासमें, और लोक सबको नास ॥

वैसे तो श्री राजजीके साथ लीलायें करती हुई ब्रह्मात्माओंको दूसरी ओरका ख्याल रखनेकी ही आवश्यकता नहीं होती थी । उन्होंने उस समय भौतिक सुख दु:खका अनुभव नहीं किया । वे अपने धनीको भूली नहीं । श्री कृष्णके अन्तर्धान होनेपर भी उनका ध्यान श्री कृष्णजीके प्रति

ही था। यद्यपि परमधामका आनन्द व्रजरासकी लीलाओंके आनन्दसे अति श्रेष्ठ है तथापि श्रीराजजीके साथ होने पर उन्हें इस जगतमें भी राजजीका ही आनन्द प्राप्त हो रहा था। नश्वर जगतके सुख दुःखसे उन्हें कोई मतलब नहीं था। यद्यपि व्रजकी लीलायें ब्रह्मात्माओंको नश्वर जगतके सुख दुःखोंका अनुभव करवानेके लिए थीं किन्तु श्री राजजीके साथ रहने पर उन्हें उस समय सुख दुःखोंका अनुभव नहीं हुआ।

व्रज रास लीला दोऊं माहिं, दुःख तामसियों देख्या नाहिं ।
प्रेम पियासों ना करे अंतर, तो ये दुःख देखे क्यों कर ॥

उन्हें नश्वर जगतके सुख दुःखोंका अनुभव करवानेके लिये ही पुनः जगतमें भेजना पड़ा जिससे भौतिक जगतकी ओर आकृष्ट होकर वे अपने धनी, धाम एवं स्वयंको ही भूल जायें। हुआ भी वैसा ही, नश्वर जगतमें आते ही उन्हें स्वयंका अपने धनीका तथा अपने धामका विस्मरण हो गया। वे ब्रह्मात्मायें जैसी ही नहीं रहीं उनका व्यवहार नश्वर जगतके जीवोंका-सा बन गया। अब उन्हें जागृत करनेकी आवश्यकता हुई। इसलिए तारतम ज्ञानका अवतरण हुआ। श्री श्यामाजी सद्गुरुके रूपमें प्रकट हुयीं। उन्होंने अनेक कष्ट सहते हुये खोज की। श्री राजजी स्वयं प्रकट हुये और तारतम मन्त्र एवं ज्ञान देकर उनको अपने स्वरूपका अनुभव करवाया तथा स्वयं उनके हृदयमें विराजमान हुये। इस प्रकार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीके हृदयमें युगलस्वरूप श्री राजश्यामाजी विराजमान हुये। तभी उनको परमधाम व्रज, रास आदिका अनुभव हुआ। तत्पश्चात् सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीने श्रीराजजी प्रदत्त तारतम ज्ञानका प्रचार-प्रसार करना आरम्भ किया और श्रीराजजीसे प्राप्त तारतम मन्त्र प्रदान कर ब्रह्मात्माओंको जागृत किया। धर्मके मूल स्थानके रूपमें श्री ५ नवतनपुरी धामकी स्थापना की। उस समय ब्रह्मात्माओंको आकृष्ट करनेके लिए कुछ चामत्कारिक लीलायें भी हुयीं, फिर तारतम ज्ञान द्वारा उन्हें जागृत करना आरंभ किया। इस ज्ञानके द्वारा उन्हें परमधाम, व्रज, रास और जागनी इन सभी लीलाओंका अनुभव होने लगा।

जागनी लीलाकी यही विशेषता है कि तारतम ज्ञानके द्वारा जागृत होने पर परमधाम, व्रज, रास तथा जागनी इन चारों लीलाओंका अनुभव हो सकता है। कहा भी है, **जागनीमें जागते सुख**। वास्तवमें जागृत होने पर ही

यह संभव है। व्रज और रासकी लीलाओंमें अपने धामधनीके साथ रहनेसे ब्रह्मात्माओंको अत्यन्त आनन्दका अनुभव हुआ किन्तु आनन्दमें मग्न रहनेसे उन्हें परमधाम तथा व्रज रासका अन्तर पता नहीं चला। यह सुख तो तारतम ज्ञान द्वारा जागृत होने पर ही प्राप्त होता है और वह भी ब्रह्मात्माओंको ही। इसीलिए कहा है,

अब जाग देखो सुख जागनी, ए सुख सोहागिन जोग ।
तीन लीला चौथी घरकी, इन चारोंको यामें भोग ॥

यहाँ पर ब्रह्मात्माओंको सुहागिनी कहा है। सुहागिनीका तात्पर्य है कि उन्हें अपने स्वामी श्री राजजीका सुहाग प्राप्त है। लोक व्यवहारमें भी ऐसा देखा जाता है कि जिस स्त्रीका सम्बन्ध उसके पतिके साथ निरन्तर है वही सुहागिनी कहलाती है। इसी प्रकार आत्मा भी वही सुहागिनी कहलाती है जिसका सम्बन्ध अक्षरातीत परमात्मासे है। अब हमें यह विचार करना है कि हमारा सम्बन्ध अक्षरातीत परमात्मासे है या नहीं ? वैसे तो यह सम्पूर्ण सृष्टि ही मूल रूपसे अक्षरातीतसे सम्बन्ध रखती है किन्तु उसे इसका कोई भी अनुभव नहीं होता है। इसी प्रकार हमें भी विचार करना चाहिये कि हमें श्री राजजीके सम्बन्धका अनुभव हो रहा है या नहीं ? यदि ऐसा अनुभव हो रहा हो तो हम ब्रह्मात्मा हैं, अन्यथा नहीं। हमें ऐसा अनुभव तो नहीं हो रहा है किन्तु हम अनुभव करना चाहते हैं तो इसके लिए विलम्ब नहीं करना चाहिये। किन्तु हम मात्र इसकी जानकारीसे ही सन्तुष्ट रहते हैं तो निश्चय ही हम ब्रह्मात्मा नहीं हैं।

तारतम ज्ञानके द्वारा जागृत होने पर हमें श्री राजजीके साथके सम्बन्धकी पहचान होगी और प्रेम लक्षणा भक्तिके द्वारा श्री राजजीका अनुभव होगा। यही जागनीका सुख है। अब जागृत होकर इस सुखका अनुभव करें।

सामान्यतः हमें ऐसा अनुभव तथा जानकारी स्वतः प्राप्त नहीं होती है। इसके लिए विशेष मार्गदर्शनकी आवश्यकता रहती है। वह मार्गदर्शन गुरुजनोंसे प्राप्त होता है। इसलिये गुरुका स्थान बहुत ऊंचा माना गया है। महामति श्री प्राणनाथजी कहते हैं, जैसे मृग मरिचिका(मृगतृष्णा)के जलसे प्यास बुझाया नहीं जा सकता उसी प्रकार गुरुके बिना जीव पार पा नहीं सकता। इसमें भी सद्गुरुकी प्राप्ति होगी तो उनसे स्वयंका, अपने धनी(परमात्मा)का

एवं परमधामका अनुभव होगा । जीवनके अभ्युदयमें गुरुकी भूमिका बहुत बड़ी रहती है । इसीलिये मंगलाचरणमें गुरुवन्दना करते हैं । साथमें यह भी नहीं भूलना चाहिये कि परमात्माका स्थान गुरुसे बहुत ऊंचा है । परमात्मा परमधामके स्वामी हैं तो गुरु मार्गदर्शक हैं । स्वामी और मार्गदर्शकमें बड़ा अन्तर है । इस अन्तरको जानकर विवेक पूर्वक व्यवहार करनेसे गुरुका महत्त्व कम नहीं होता अपितु बढ़ जाता है किन्तु मात्र अन्धानुकरण करनेसे गुरु शिष्य दोनों ही डूब जातें हैं । गुरुके मार्गदर्शनमें अपनी साधना बढ़ानेसे सफलता प्राप्त होती है । जीवनमें गुरुका निरन्तर मार्गदर्शन आवश्यक है । इस प्रकार बढ़ायी गयी साधना अनुभव तक पहुँचा सकती है अन्यथा मात्र औपचारिकताके लिये गुरु बनानेसे लाभ नहीं होता है । मनुष्य जीवनका लक्ष्य एवं उसकी प्राप्तिके लिये मार्गदर्शक गुरुजन हैं । उनके मार्गदर्शन बिना सन्देह नहीं मिटेगा ।

तारतम ज्ञानसे जागृत होनेपर सभी सन्देह मिट जाते हैं । इसीलिये कहा है, अब जागृत होकर जागनीका सुख देखो । जागृत हो जाओगे तो तुम्हें यहीं बैठे बैठे व्रज, रास, जागनी एवं परमधामका अनुभव होने लगेगा । नश्वर जगतमें रहते हुये भी परमधामका अनुभव करनेके लिए यह तारतम ज्ञान है । परमधाममें जागृत होना तो श्रीराजजी पर निर्भर करता है । **धनी जगाए जागहीं** तथा **सो आज्ञाएं उठ बैठसी, सब अपने वतन** आदि वचन यही बात कह रहे हैं । श्रीराजजीने ब्रह्मात्माओंको अपने समक्ष बैठाकर उनकी सुरताको नश्वर जगतमें भेजा और जगतका खेल दिखाया । जब वे ब्रह्मात्माओंको सचेत करेंगे तभी वे एक साथ जागृत हो पायेंगी । किन्तु जगतका खेल देखते हुए भी परमधाम तथा धामधनीका अनुभव हो सके इसके लिए जागृत होना आवश्यक है । यह तारतम ज्ञान इसी जागृतिके लिये है और यह अवसर भी जागनीका है । इसमें आत्मा जागृत होगी तो उसे **इतहीं बैठे घर जागे धाम** का अनुभव होगा ।

सौन्दर्यका सच्चा स्वरूप

कुरूपता किसीको भी प्रिय नहीं है। सुन्दर व्यक्तिकी ओर ही नहीं वस्तुओंकी ओर भी लोग खिंचे चले जाते हैं। बगीचेमें खिले हुए फूल कितने सुन्दर लगते हैं कि उनसे नजर हटानेका मन नही करता। प्रकृति ज हाँ सुरभित, पुष्पित और पल्लवित होती है, झरने झरते हैं, पक्षी कूकते हैं, वहाँका दृश्य देख कर आत्मविभोर हो उठते हैं । सौन्दर्य आत्माकी चिर-पिपासा है। सौन्दर्यमें ही मनको आनन्द मिलता है। सुन्दर बननेकी अभिलाषा भी आध्यात्मिक है। इसलिए इसे प्राप्त करना मनुष्यका प्रकृति प्रदत्त स्वभाव ही है

सौन्दर्यकी परिभाषा करते हुये प्रसिद्ध कवि कीट्सने लिखा है- **सौन्दर्य ही सत्य है और सत्य ही सौन्दर्य है**। इससे यह स्पष्ट होता है कि कि सत्यस्वरूप परमात्माका प्रकाश ही सौन्दर्यके रूपमें परिलक्षित होता है। अतः सौन्दर्यकी कामना मनुष्यकी आत्मिक आवश्यकता है। सौन्दर्यके बिना इस जीवनका महत्व भी कुछ नहीं है। सत्य, शिव और सुन्दर ये सब परमात्माकेही स्वरूप है इसलिए इन्हें प्राप्त करनेका प्रयास करना परमात्माको प्राप्त करनेका ही प्रयास है।

भूल यह है कि मनुष्यने पदार्थकी गढ़नको सौन्दर्य मानकर उसका एक काल्पनिक ढाँचा बना कर रखा है। परमात्मा नित्य और सर्वकालिक है इसलिए बदलते रहनेवाले स्वरूपको सौन्दर्य नहीं मानेंगे। स्वरूपमें प्राणकी आकर्षक स्थितिका नाम ही सौन्दर्य है। सौन्दर्य सत्य है इसलिए वह भौतिक नहीं हो सकता, अपवित्र नहीं हो सकता। विचारणीय है कि आज जो सौन्दर्यकी परिभाषा की जा रही है क्या इसमें भी कुछ सत्यता है ।

आत्मकथामें महात्मा गान्धीजीने लिखा- **''वास्तविक सौन्दर्य हृदयकी पवित्रतामें है। बाह्य बनावट और प्रदर्शनसे उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। यह जो रूपकी सजावट, वेष विन्यासमें विचित्रताका प्रसार बढ़ रहा है यह आन्तरिक सौन्दर्यको छलता है, इससे बचना**

चाहिए'' । डॉ. क्वार्ल्सका भी मत ऐसा ही है । वे लिखते हैं - ''सुन्दरताका सद्‌गुणोंके साथ संयोग होना, हृदयका स्वर्ग है । यदि उसके साथ दुर्गुण हैं तो वह नरकके समान है । मूर्ख लोग सौन्दर्यके बाह्य स्वरूपकी पूजा करते हैं इसलिए वे निन्दाके पात्र बनते हैं'' ।

मनीषियोंकी सम्मतियाँ यह व्यक्त करती हैं कि अपनी चमक-दमक बढ़ाकर सुन्दरताका प्रदर्शन यह व्यर्थ बात है । आजकल जो सौन्दर्य प्रसाधनों पर करोड़ों रुपये लोग व्यय कर रहे हैं, उससे दुश्चिन्ताओं और दुर्गुणोंके आडम्बर ही खड़े हो रहे हैं । जितना इन कृत्रिम साधनोंकी मांग बढ़ रही है उतनी ही इनकी उपजमें धन लगता है । जिस धनसे योग्यतायें बढ़ सकती थी, शिक्षाका प्रसार और स्वास्थ्यसंगठनके लिए शक्ति संचय किया जा सकता था, वही इन प्रसाधनोंमें अपव्यय होता है । शौकीनी बढ़ती है तो लोग आलसी और अकर्मण्य बनते हैं, समय बरवाद करते हैं और शक्तियोंका पतन कर लेते हैं । चमड़ीकी चमचमाहटके लिए स्नो, क्रीम, पाउडर, लिपिस्टिक आदिका प्रयोग करके लोग सुन्दर बननेका प्रयत्न करते हैं । परमात्मा प्रदत्त अपनी वास्तविक सूरतको शृगार-साधनोंसे छिपानेका प्रयत्न करना ओछेपनका प्रतीक है । भोले लोग यह भी नहीं समझते कि शारीरिक सौन्दर्य स्वास्थ्य पर अवलम्बित है । स्वास्थ्य अच्छा न हुआ तो चमड़ीकी सजावट कभी आपको संतोष नहीं दे सकेगी । कृपया इस भूलको समझने और सुधारनेका प्रयत्न करें ।

आयका एक बड़ा भाग इन बेजान वस्तुओंमें खर्च करना बुद्धिमत्ता नहीं है । पैसेका सदुपयोग, स्वास्थ्य, सफाई, शिक्षा और सद्गुणोंके विकासके लिए किया जाय तो गाढ़े परिश्रमकी कमाई भी सार्थक होती है । इन बुराइयों पर विचार करें । कितना अच्छा होता यदि हम आन्तरिक सौन्दर्यकी महत्ताको समझ पाते ?

हम खुलकर कार्य करें । बँधे-बंधेसे न रहें, अपने हाथ-पांवोंको थोड़ा इधर-उधर हिलाते डुलाते रहें । जिससे हमारा रक्त संचालन ठीक रहेगा, नाड़ियाँ ठीक काम करेंगी, शरीर साफ रहेगा तो हमारे शरीरमें प्राण और ओज बना रहेगा । प्राणवान् व्यक्ति रंगसे भले काले व सावले हों बड़े

मोहक लगते हैं । बाहरी बनावटसे थोड़ी देरकेलिए भले ही प्रसन्न हो सके अन्ततः कोई लाभ न निकलेगा । उद्विग्नतायें ही परेशान करती रहेंगी । फारसी कहावत है, **''हाजते मश्शाता नेस्त रूम दिलाराम रा''** अर्थात् सौन्दर्यको सजावटकी आवश्यकता नहीं होती । ऐसे ही सौन्दर्यको प्राप्त करनेका प्रयास करें तो हम सच्चे सौन्दर्य पारखी माने जायेंगे ।

स्वस्थ स्वभावसे सौन्दर्य मिलता है । मानसिक कमजोरियां ही कुरूपताका कारण हैं। भली आदतोंका सम्बन्ध मनुष्यकी मानसिक शुद्धतासे है, मानसिक चेष्टायें सत्-कर्मोंमें आनन्द लेती रहती हैं तो शरीर और मनकी शक्तियाँ प्रखर बनी रहती हैं । इससे अपनी सुन्दरता भी अक्षुण रहती है । यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि शक्तियोंका संचय ही सौन्दर्यवान् होनेका लक्षण है । दीन-दुर्बल और मानसिक उत्तेजनाओंमें घिरे रहने वाले व्यक्तियोंकी न तो बाहरी सुन्दरता स्थिर रहेगी और न आन्तरिक ही ।

सुन्दरता हमारी प्रसन्नता, मुस्कुराहट, उत्तम स्वास्थ्य, आशायुक्त निश्चित जीवन, हर्ष और उल्लासमें छिपी हुई है । अपने जीवनको मनहूस बनाना, साधनों वस्तुओंके लिए बुरी तरह रोते-झींकते रहना बड़ा बुरा लगता है, ऐसे लोगोंकेपास किसी भी मनुष्यका बैठनेका जी नहीं करता । हँसमुख व्यक्तियोंको लोग हरवक्त घेरे रहते हैं क्योंकि उनके जीवनमें उल्लास होता है । ऐसे भावोंकी स्थिरता सुन्दर बननेके लिए अत्यन्त आवश्यक है । तनावपूर्ण मानसिक स्थिति एक प्रकारका विकार है जिससे सौन्दर्ययुक्त चेहरों पर भी उदासी छाई रहती है । ईर्षा, द्वेष, काम, क्रोध, घृणा, चिन्ता उत्तेजना आदिसे मनुष्यका व्यक्तित्व अनाकर्षक बनता है इससे मनुष्यका आन्तरिक सौन्दर्य नष्ट होता है इनसे दूर ही रहना चाहिए ।

सौन्दर्य महानताका चिह्न है । हिन्दुओंके देवी देवतओंकेमुख पर एक प्रकारका प्रकाश दर्शाया जाता है इसे **तेजोवलय** कहते हैं । दूसरी संस्कृतियोंमें भी इसी तरहकेमुख-मंडल चित्रित किये जाते हैं । इससे अनुमान होता है कि सौन्दर्य दैवी तत्व है और वह तेज तथा शक्तिके रूपमें महापुरुषोंमें विद्यमान होता है । मनकी ओजस्विता, मृदुता और दया भावसे इस सौन्दर्यका आभास होता है । वैसी ही विचारणायें अपनाकर हम

भी अपनी तेजस्विताको जागृत करें तो सौन्दर्यका संतोष हम भी प्राप्त कर सकते हैं । मनुष्यकी गति सुन्दर वस्तुओंसे सुन्दर भावनाओंकी ओर, सुन्दर मनोभावोंसे सुन्दर जीवनकी ओर होती है । जीवनकी सुन्दरता ही पूर्ण सौन्दर्यके दर्शन करानेमें समर्थ होती है ।

सुन्दर गतिविधियोंका तात्पर्य मनुष्यकी सरलतासे है । उसकी निश्छलता, सरसता, गुण-ग्राहकता और मधुरता पर लोगोंका अन्तःकरण बरबस ही आकर्षित हो जाता है । बाह्य खूबसुरत डाकूके मुख पर जो आतंकका भाव छाया रहता है उससे लोग भयभीत हो जाते हैं, इस सौन्दर्यको कुटिलता मानकर लोग पास भी नहीं जाते । कामुकता भी इसी तरह सौन्दर्यका महान् दुर्गुण है । आकर्षक व्यक्तित्व तो शील और सद्गुणोंके प्रकाशसे प्राप्त होता है । प्रेम, दया और विश्वासकी सुन्दरतासे ही लोग दीर्घकाल तक प्रभावित होते हैं । शील स्वभावमें वह चुम्बकत्व होता है जो सभीके दिलोंको मोह लेता है । भलमनसाहत लोगोंको प्रिय लगती है । इन्हें ही सौन्दर्यके उपकरण मान सकते हैं ।

प्रेम-भावनाओंका सौन्दर्य बढ़ा आकर्षक है । ऋषियोंके आश्रमोंमें प्रेम और आत्मीयताके प्रबल संकल्प गूजा करते थे इसी कारण वन्य पशु भी निर्भय होकर वहाँ विचरण करते थे । ऋषियोंके बालक स्वच्छन्दतापूर्वक हिंसक पशुओंसे खेला करते थे और उनसे मैत्री स्थापित कर लेते थे । आन्तरिक सौन्दर्यकी आभा बोलती थी वहाँ, इसीसे आकर्षित होकर जीवजन्तु भी वहाँ रहना अधिक पसन्द किया करते थे ।

डॉ. ड्राइडेनका यह कथन नितान्त सत्य है-जब सौन्दर्य रक्तमें उबाल पैदा करता है तब प्रेम मस्तिकको बहुत ऊँचे उठा देता है । सौन्दर्य भेद-भावकी कटुताका बहिष्कार करता है । इसी एक सार्वभौमिक सत्य पर इस संसारकी व्यवस्था युगोंसे चली आ रही है और जब तक सौन्दर्यका एक भी कण इस धरती पर जीवित रहेगा, यह क्रम निरन्तर इसी तरह चलता रहेगा । सृजनकी इस शक्तिको बनाये रखनेके लिए प्रेम, दया, सेवा, उदारता, सहयोग, करुणा, स्वच्छता आदि दैवी गुणोंका अभ्यास बनाये रहना होगा ।

दुष्टता, मलिनता, अस्वच्छता और मानसिक दुर्भावनाओंके कारण

जो अपनी शक्तियोंका ह्रास करते हैं उससे कुरूपता पड़ती है। धन और सम्पत्तिके अभावमें भी यदि अपने सद्‌गुणोंको विकसित रखा जाय तो अपनी मोहक शक्ति ज्योंकी त्यों बनी रहेगी। धनवान होना सौन्दर्यका लक्षण नहीं, शरीरकी सजावटमें भी आकर्षण नहीं है। जो वस्तु बलात् अपनी ओर खींच लेती है वह है व्यक्तिकी सद्‌भावनायें। आन्तरिक निर्मलता पलमें दूसरोंको मोह लेती है, लोग पीछे दौड़े चले आते हैं ।

अपने मनकी चिन्तायें हटायें, जीवनकी जटिलताओंमें प्रवेश पानेकी कामनाका परित्याग कर दें, हम निश्चय ही अपनी सुन्दरता प्राप्त कर सकेंगे। सुखद विचारोंकी भाव-तरंगें, सादगीके उपकरण मिलकर सौन्दर्यका निर्माण करते हैं। प्रेम और कर्तव्य-भावनासे सुन्दरताका विकास होता है। मनको सद्‌गुणोंसे आरोपित करनेमें ही मनुष्यका सच्चा सौन्दर्य सन्निहित है। इस सुन्दरता पर दुर्भावनाओं, ईर्षा, छिद्रान्वेषणकी मलिनता न पड़ने दें। इस कुरूपतासे सदैव दूर रहनेका प्रयत्न करते रहें। प्रसन्नता और आशापूर्ण सुखद विचारोंको जितना अधिक अपने मस्तिष्कमें स्थान देंगे उतना ही हमारे शरीर और मनमें तेजस्विता बनी रहेगी, यही सौन्दर्यका गुण है।

सुन्दर बननेके लिए बाहरी साधन जरूरी नहीं हैं। इस भ्रान्त धारणाको-कि अधिक बाह्य शृंगार करेंगे तो अधिक लोग आकर्षित होंगे, अपने मस्तिष्कसे निकाल कर अपने अन्तःकरणके सौन्दर्यको खोजनेका प्रयत्न करें। हमारी प्रसन्नतामें, हमारे सुखद विचारोंमें सुन्दरता भरी हुई है उसे जागृत करें। सच्चा सौन्दर्य मनुष्यके सद्‌गुणोंमें है। हम गुणवान् बनें, तेजस्वी बनें तो सौन्दर्य हमारा साथ कभी न छोड़ेगा।

सं - स्वामी लक्ष्मणदेव महाराज

श्री निजानन्द कथामृत

(ब्रह्मलीन पं. श्री कृष्णदत्त शास्त्री विरचित
निजानन्द चरितामृतसे)

गत वर्ष २०२० अंक ३ पृष्ठ १४ से क्रमश.....

छूटी गयो तुम दुहुन तें, राज काज[1] को काम ।
कर्यो संग गुरु शिष्यको, लग्यो रंग निष्काम ॥
देवचन्द्र और गांगजी, कढैं शहरतें दोई ।
बसैं अन्त वे जाई कै, काज तुमारो होई ॥

(वृतान्त मु. ३७)

तुम दोनोंने राजकाज छोड़कर एक विरक्त मार्ग पकड़ रखा है और श्री देवचन्द्रजी तथा गांगजीभाई इन दोनों गुरुचेलेके रंगमें फंस गए हो। इन दोनोंको ग्रामसे निकाला जायेगा तब तुम्हारा चित्त ठिकाने आवेगा। इतना सुनते ही गोवरधनभाईको क्रोध आ गया। तलवार काढ़कर दोनों भाई सामलजीको मारने दौड़े। सामलजी माताके पास जा छिपे तब कहीं बचे। माताने समझा बुझाकर दोनोंको शान्त किया। जब पिता केशवरायजी घर आये तो उन्होंने भी यह सब वृतान्त सुना। श्री निजानन्द स्वामीजीके पास जानेसे एक तो लड़के विरक्त दशाको प्राप्त होते जा रहे हैं, और दूसरे लौकिक व्यवहारसे भी हाथ धो बैठेंगे। यह चिन्ता पिताको भी थी, परन्तु अभी तक इस चिन्ताको व्यक्त नहीं

---

१. पिता केशवरायजी राजाके दीवान थे और शामलजी कामदार थे। राज्यके कामकाजको देखना इनका काम था। अतः सामलजी अधिकार सत्ताका बल दिखाकर गोवरधनभाई तथा श्रीजीको धमकाना चाहते थे। परंतु ब्रह्मानंद लीलाका साक्षात्कार होनेवालोंके लिये यह सब तुच्छ था। दूसरी बात- शामलजीने निजानंद सदगुरुको ग्रामके बाहर निकालनेका अपशब्द भी कहा था। जिसको सहन कर लेना धर्मशास्त्रकी दृष्टिसे भी अयोग्य था, अतः बडे भाईकी मर्यादाका उल्लंघनकर उनको मारने दौडे थे।

कर सके थे । संयोगवश आज अवसर आ मिला । अतः दोनों लड़कोंको बुलाकर समझाने लगे कि, तुम लोग ऐसा क्यों करते हो ? जिससे घरमें परस्पर कलह क्लेश उत्पन्न हो । जब घरके सब लोग नहीं चाहते तो तुम श्री निजानन्द स्वामीजीके पास क्यों जाते हो ? यह तो सब जानते ही हो कि श्री निजानन्द स्वामीजीने कान्हाजी भट्टके पाससे सब कुछ सीखा है । यदि तुम लोग भी श्री निजानन्द स्वामीजीके पास न जाकर कान्हाजी भट्टके पास कथा वार्ता सुनने जाया करो तो क्या हानि है ?

गोवर्धनभाई तथा श्रीजीने कहा, यदि कान्हजी भट्ट हमारा समाधान कर दिया करेंगे तो हम नित्य प्रति उनके पास ही जाया करेंगे । हमें तो ज्ञानसे मतलब है यदि कान्हजी भट्टके पास मिल जाया करे तो अति उत्तम । इस प्रकारसे प्रत्युतर सुनकर पिताजी बहुत प्रसन्न हुए और भट्टजीके पास ले गए ।

या विधको ठहराव करि, गये पिता संग आप ।
भट्ट पास बैठे तहां, केशवराई प्रताप ॥
बोले केशवराई तब, भट्ट तुमारे पास ।
लै आये हम पुत्र ये, समझि सु देउ प्रकाश ।
पूछत हैं इक प्रश्न ये, दीजै उत्तर तौन ॥
रहैं सदा आज्ञा विषे, करैं कहौ तुम जौन ॥

(वृतान्त मु. ३७)

कान्हजी भट्ट श्यामजीके मन्दिरमें नियमित भागवतकी कथा कहा करते थे । आज अचानक ही पुत्रों सहित केशवरायजीको आते देखा तो भट्टजी बहुत प्रसन्न हुए । बड़े प्रेमके साथ स्वागत किया । केशवरायजीने पुत्रों सहित प्रणाम किया और बैठ गये । कहने लगे, भट्टजी ! ये दोनों पुत्र कुछ पूछना चाहते है, उसका प्रत्युत्तर मिलने पर ये सदा काल आपकी सेवामें रहनेको कहते हैं । भट्टजीने कहा, जो कुछ पूछना चाहते हो, सहर्ष पूछ सकते हैं ।

दोनों भाई पूछने लगे, भट्टजी ! लोक, तत्त्व और गुण तथा प्रलय कितने हैं ? एवं कितने नित्य हैं और कितने अनित्य ? कहने लगे, भट्टजी ! इस प्रश्नका समाधान आप इस प्रकारसे करनेकी कृपा कीजिये कि जिससे एक तो विषय विवादग्रस्त न बने और संक्षेपमें ही सबका स्पष्टीकरण हो जावे । यह सुन भट्टजी ने कहा,

भट्ट कही गुन तीन हैं, चौदह लोक प्रमान ।
नहीं पन्द्रमो लोक है, चौथो गुन नहीं जान ॥
पांच तत्त्व तें नहिं छठो, प्रलय चारि नहिं और ।
पुरुष प्रकृति लौं नाश है, रहैं न कोऊ ठौर ॥
सुनि सतगुरु पूछ्यो तहां, परब्रह्मको रूप ।
रहै कहां ता समयमें, कहिये भेद अनूप ॥

(वृतान्त मु. ३७)

गोवर्धनभाई तथा श्रीजीने कहा, भट्टजी ! आप तीन गुणके अतिरिक्त कोई चौथा गुण नहीं वर्णन करते और न चौदह लोकसे अधिक कोई पन्द्रहवां लोक बताते हो । एवं पांच तत्त्वके सिवाय कोई छठा तत्त्व भी आपने नहीं बताया और फिर चार प्रलयके अन्दर उन सबका नाश भी वर्णन कर चुके । इतना ही नहीं प्रत्युत पुरुष प्रकृति पर्यन्त सबका नाश वर्णन कर अन्तमें किसीका अवशेष रहना भी नहीं बताते । तब भला ! यह तो बताइये कि परब्रह्म परमात्माका रूप क्या है और महाप्रलयके अनन्तर वह कहां पर रहता है ?

भट्टजीने प्रत्युत्तर दिया, परमात्माका निवास क्षीरसागरमें है । वहां पर एक अक्षरवटका वृक्ष है, जिसका कभी नाश नहीं होता । महाप्रलयके समय परमात्मा अंगुष्ठ प्रमाण रूप धारणकर उस वटवृक्ष पर विराजमान रहता है, इस प्रकार शास्त्र पुराणोंमें लिखा है ।

पूछत दोऊ तब तहां, प्रकृति पुरुष लौं नाश ।
चौथो छठौ न पन्द्रमो, बसै कहां यह वास ॥

गोवरधनभाई तथा श्रीजीने कहा, भट्टजी ! अभी तो आप कहते थे कि महाप्रलयमें कुछ भी अवशेष नहीं रहता और सम्पूर्ण लोक, गुण तथा तत्त्वोंका नाश हो जाता है एवं आपके कथनानुसार कोई छठा तत्त्व भी नहीं है और न चौथा गुण है। चौदह लोकका तो आप नाश ही वर्णन कर चुके, तब वटवृक्ष, परमात्मा और क्षीरसागर कहां पर बने रहे हैं और ये सब किस तत्त्वसे बने हैं ? जो नष्ट न हुए। पांच तत्त्वका तो आप नाश होना वर्णन कर चुके एवं महाप्रलयमें जब पुरुषप्रकृति पर्यन्त सबका नाश हो जाता, तब क्षीरसमुद्र कहां पर बने रहे हैं और इसका नाश क्यों न हुआ ? इतना सुनते ही भट्टजी असमंजसमें पड़ गए। प्रत्युत्तर देनेकी कौन कहे सब अकल ही गुम हो गई। कहने लगे, हे केशवरायजी ! ये तो जगतके आचार्य प्रकट हुए हैं, इनके प्रश्नोंका उत्तर देना साधारण मनुष्यकी बुद्धिके बाहरकी बात है। इनका समाधान हमसे नहीं हो सकता। यह सुनकर केशवरायजी निराश हुए और पुत्रोंको लेकर घर लौटे।

कही पिताने तब तहां, तुम सुत चतुर सुजान ।
देई आत्मा साखि जो, सोई करौ प्रमान ॥

केशवरायजीने दोनों पुत्रोंसे कहा, तुम दोनों परम प्रवीण और तत्त्वज्ञ हो। अब मैं आज्ञा देता हूं कि आपको जहां पर अनुकूल पड़े और आत्मा साक्षी देवे, उसके पाससे ज्ञान प्राप्त कर सकते हो। हमारी तरफसे किसी प्रकारका विरोध न समझो, आपको जो उचित लगे, वहीं करो।

इस प्रकारसे और भी कितने ही प्रसंग उपस्थित हुए तो अनेकों बार परीक्षा और कसौटीके रूपमें भी आपको लौकिक और अलौकिक विषयोंके विचार केंद्रमें होकर मार्ग काटना पड़ा, परंतु आप किसी प्रकार भी अपने लक्ष्यसे विचलित न हुए, प्रत्युत निरन्तर श्री निजानन्द सदगुरुजीके द्वारा धाम परमधामके गूढ गम्भीर तथा दुरूह तत्त्वोंका मनन करते रहे। जहां तक हो सका परमधाम पचीसों पक्षके सूक्ष्मातिसूक्ष्म भेदोंको ग्रहण करनेमें कमी नहीं रहने दी। ब्रह्मानन्दलीलाके रसमें तो आपकी अन्तरात्मा इतनी तल्लीन रहती थी कि प्रतिक्षण उसका भास प्रत्यक्षवतत् प्रतीत होता

रहता था। इस प्रकार श्रीनिजानन्द सदगुरुजीके चरणोंमे उपस्थित रहकर १४ वर्ष पर्यन्त अनुभवात्मक ब्रह्मानन्द लीलारसका निरन्तर पान किया और खूब आनन्दमें रहे।

परन्तु परिवर्तनशील प्रकृतिका नियम अटल है। इस दुःखात्मक मिथ्या जगतमें पंचभौतिक शरीरद्वारा कोई भी दिव्य ब्रह्मानन्दरसका निरन्तर पान करता रहे अथवा जीवनमुक्त दशामें ब्रह्मानन्दका अनुभव दीर्घकाल तक लेता रहे। यह प्रकृतिसे सहन नहीं होता। रंगमें भंग करना उसका काम है। उसका प्रबल कालचक्र तो सदाकाल ऐसे अवसरोंकी प्रतीक्षा ही किया करता है, उसे बनने बिगड़नेकी चिन्ता नहीं। निदान उसने काल चक्र घुमाया। श्री गोवरधनभाई अपना पंचभौतिक शरीर छोड़कर चल बसे। यद्यपि उनके लिये तो यह सौभाग्यका समय था, वे तो सदाके लिये नित्यानन्दमें जा पहुंचे। आत्मा जन्म मरणके बन्धनसे मुक्त हो गया, परन्तु लौकिक दृष्टिसे यह दृश्य एक प्रकारका व्रजपात था।

इस क्षणभंगुर जगतमें प्रत्येक प्राणीका शरीरान्त और वियोग अवश्य होनेवाला है, इस बातको प्रायः सब जानते हैं और ज्ञानी लोग तो इसके लिये चिन्ता भी नहीं करते, परन्तु फिर भी असमयका वियोग सबको खटक जाता है। यों तो श्रीमहेराजजी(श्रीजी) भी इस शरीरकी क्षणभंगुरताको खूब समझते थे, परन्तु दोनों भाइयोंका एकसाथ रहना और एक साथ ब्रह्मानन्दलीलाका रसका पान करना, यह सब इस वियोगसे बिगड़ गया। इस आघातसे आपकी जाग्रत आत्माको और भी अधिक वैराग्य हो गया।

इस प्रकार वि.सं. १७०० में श्री गोवरधनभाईके शरीरत्याग हो जानेसे श्रीजीको ऐहिक पदार्थों पर कुल कुटुम्ब आदि पर जो कुछ प्रेम था, वह और भी कम हो गया और अन्तरात्मामें लौकिक विषयोंसे एकदम ग्लानि होने लगी।

(क्रमश.....)

(समाचार दर्पण)
परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके जन्मोत्सव प्रसंगमें विविध कार्य संपन्न हुए

धर्मप्राण सुन्दरसाथजी ! आप सभीको ज्ञात ही है कि श्री ५ नवतनपुरी धामकी पवित्र धरा अक्षरातीत परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी(श्रीकृष्णजी)का निवासस्थान है (जिहाँ वालानो विश्राम), सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज एवं महामति श्री प्राणनाथजीकी प्राकट्य एवं साधना भूमि है, जहाँपर पतितपावनी धाम निदर्शिनी श्री यमुनाजीके पावन तट एवं अवनिके कल्पतरू महाद्रुम खीज डा(शमी)की शीतल छाँव है । अनेकानेक महिमासे मण्डित ऐसी अलौकिक भूमि श्री ५ नवतनपुरी धाम श्रीकृष्ण प्रणामी धर्म निजानन्द सम्प्रदायका शीर्षस्थ, प्रमुख एवं सर्वोपरि तीर्थ स्थान है । महामति श्री प्राणनाथजी कहते हैं,

पहले बीज उदय हुआ, पुरी जहाँ नवतन ।
सब पुरियोंमें उत्तम, हुई सो धन धन ॥

ए मध्ये जे पुरी कहावे, नवतन जेहनुं नाम ।
उत्तम चौदे भवनमां जिहाँ वालानो विश्राम ॥

सब वन्दित पुरी नौतन, नारद शारद नर शुक मुन ।
रज इच्छत ब्रह्मा विष्णु महेश, महाविष्णु सहस्त्र फनी शेष ॥

श्री ५ नवतनपुरी धाम श्री कृष्ण प्रणामी धर्मका आचार्य पीठ है । पूर्णब्रह्म परमात्मा अक्षरातीत श्री कृष्णजीकी प्रत्यक्ष प्रेरणासे निजानन्दाचार्य सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज द्वारा स्थापित गौरवमय गादी निजानन्द संप्रदायकी प्रमुख गादी है । इस गौरवपूर्ण महान गादीमें सर्व प्रथम सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्रजी महाराज विराजमान हुए । तत्पश्चात् धामधनीकी आज्ञासे ही सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजने इस पुनित गादीमें अपने सुयोग्य श्रेष्ठ शिष्य महामति स्वामी श्री प्राणनाथजी महाराजको विराजमान कराकर धर्मका संपूर्ण दायित्व प्रदान किया ।

आईये सर्व प्रथम श्री कृष्ण प्रणामी धर्मकी इस दिव्य परंपरा–आचार्य परंपराके दर्शन करते हैं ।

(श्री कृष्ण प्रणामी धर्मकी आचार्य परंपरा)

०१. अनन्तश्री विभूषित निजानन्दाचार्य सद्‌गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज
(प्राकट्य सन्. १५८१ अन्तर्धान १६५५)

०२. अनन्तश्री विभूषित महामति श्री प्राणनाथजी महाराज
(प्राकट्य सन्. १६१८ अन्तर्धान १६९४)

०३. अनन्तश्री विभूषित जगद्‌गुरु आचार्या श्री केसरबाईजी महाराज
(गादी अवधि : सन्. १६८९-१६९८)

०४. अनन्तश्री विभूषित जगद्‌गुरु आचार्य श्री तेजस्वीबाबाजी महाराज
(गादी अवधि : सन्. १६९८-१७४१)

०५. अनन्तश्री विभूषित जगद्‌गुरु आचार्य श्री ब्रह्मचारीजी महाराज
(गादी अवधि : सन्. १७४१-१७७५)

०६. अनन्तश्री विभूषित जगद्‌गुरु आचार्य श्री ध्यानदासजी महाराज
(गादी अवधि : सन्. १७७५ -१७८९)

०७. अनन्तश्री विभूषित जगद्‌गुरु आचार्य श्री मोहनदासजी महाराज
(गादी अवधि : सन्. १७८९-१८०१)

०८. अनन्तश्री विभूषित जगद्‌गुरु आचार्य श्री फकीरचन्द्रजी महाराज
(गादी अवधि : सन्. १८०१-१८१३)

०९. अनन्तश्री विभूषित जगद्‌गुरु आचार्य श्री अमरदासजी महाराज
(गादी अवधि : सन्. १८१३-१८४३)

१०. अनन्तश्री विभूषित जगद्‌गुरु आचार्य श्री जीवरामदासजी महाराज
(गादी अवधि : सन्. १८४३-१८७९)

११. अनन्तश्री विभूषित जगद्‌गुरु आचार्य श्री विहारीदासजी महाराज
(गादी अवधि : सन्. १८७९-१८८८)

१२. अनन्तश्री विभूषित जगद्‌गुरु आचार्य श्री सुखलालदासजी महाराज
(गादी अवधि : सन्. १८८८-१९१६)

१३. अनन्तश्री विभूषित जगद्‌गुरु आचार्य श्री धनीदासजी महाराज
(गादी अवधि : सन्. १९१६-१९४४)

१४. अनन्तश्री विभूषित जगद्‌गुरु आचार्य श्री धर्मदासजी महाराज
(गादी अवधि : सन्. १९४४-१९९२)

१५. अनन्तश्री विभूषित जगद्‌गुरु आचार्य श्री कृष्णमणिजी महाराज

इस प्रकार साक्षात् धामधनी श्री राजजीने सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज, महामति श्री प्राणनाथजी महाराज तथा धामके अनेक विशुद्ध आत्माओंको इस गौरवमयी गादीमें प्रतिष्ठित कराकर इसके माध्यमसे भवाटवीमें भूली हुई अनन्त आत्माओंको जागृत करवाकर शाश्वत् आनन्द प्रदान करवाया ।

सुन्दरसाथजी, हम सभीको सुविदित ही है कि श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके वर्तमान धर्माचार्य हैं अनन्तश्री विभूषित जगद्गुरु आचार्य श्री कृष्णमणिजी महाराज । जो इसी पुनित परंपराके माध्यमसे धर्म, धाम तथा सुन्दरसाथकी सेवा कर रहे हैं । परमपूज्य आचार्य महाराजश्रीके सबल नेतृत्त्व, अथक परिश्रम तथा दूरगामी आयोजनके द्वारा आज प्रणामी समाजने नई ऊचाई प्राप्त की है ।

हम सभीको ज्ञात है कि अग्रेजी केलेन्डरके हिसाबसे ०१ जनवरीका दिन परम पूज्य आचार्य महाराजका जन्म दिन है । अन्तरराष्ट्रिय केलेन्डरके आधार पर प्रथम जनवरीको अंग्रेजी वर्षका प्रथम दिन माना जाता है । देश विदेशमें इस दिनका स्वागत भव्य रूपसे किया जाता है । इस अवसर पर अनेक प्रकारके मनोरञ्जनात्मक कार्यक्रम किए जाते हैं । जबकि सनातन परंपरामें नूतन मंगल प्रभातका स्वागत परमात्माकी प्रार्थना अथवा स्तुतिके द्वारा होता है । सभी देशोंका अपने अपने इतिहासके हिसाबसे नया वर्ष होता है । भारतमें भी नयाँ वर्ष बहुत ही हर्ष एवं उत्साहसे मनाया जाता है । भारत एक ऐसा देश है जहाँ नया वर्ष अलग अलग समयमें मनाया जाता है । जैसे कहीं गुड़ी पडवा, कहीं होली, कहीं दीपावली तो कहीं चैत्री पूनमके दिन नया वर्ष मनाते हैं । इन सभीमें हिन्दू संस्कृतिके हिसाबसे चैत्री पूनमको नया वर्ष मनाना अधिक वैज्ञानिक माना जाता है ।

हमारे लिए नयाँ वर्षका अर्थ है नयें उत्साह, नयें उमंग, नई उम्मीदें, नयां विश्वास, नयें आईडियाज आदि । पुराने सालमें हमने जो भी पाया या खोया, सफलता मिली या असफलता सभीसे नई सीख लेकर फिरसे उत्साहके साथ आगे बढ़नेके लिए प्रतिज्ञाकर पुरुषार्थके पथ पर प्रवेश करनेका शुभ दिन अर्थात् नयाँ वर्ष । १ जनवरी अर्थात् New yearके प्रथम दिनका स्वागत श्री ५ नवतनपुरी धाममें परमात्माकी स्तुति, प्रार्थना एवं धार्मिक कार्यक्रमोंसे किया जाता है क्योंकि १ जनवरी **श्रीकृष्ण प्रणामी धर्म निजानन्द सम्प्रदायके वर्तमान धर्माचार्य अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु आचार्य श्री कृष्णमणिजी महाराजश्रीका पावन जन्म दिन है ।** इस अवसर पर श्री ५ नवतनपुरी धाममें

प्रतिवर्ष बड़े ही हर्ष एवं उल्लासके साथ विशेष उत्सव मनाया जाता है । इसके साथ साथ विश्वभरके विभिन्न स्थानोंमें भी छोटे बड़े रूपमें पूज्य महाराजश्रीके जन्मोत्सवके सुन्दर आयोजन होते हैं ।

सत्संग सभा : प्रति वर्ष श्री ५ नवतनपुरी धाममें इस अवसर पर विशेष कार्यक्रम किया जाता है । इस वर्ष २८ से ३१ दिसम्बर पर्यन्त चतुर्दिवसीय सत्संग सभाका सुन्दर आयोजन सम्पन्न हुआ । जिसमें अलग अलग वक्ताओंने अलग अलग विषय पर सत्संगकी धारा प्रवाहित की । विशेष कर परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने-स्वास्थ्यके विषयमें जोर दिया ।

परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने कहा, हमें संपूर्ण रूपसे स्वस्थ होना आवश्यक है । संपूर्ण रूपसे स्वस्थ होनेका तात्पर्य इतना हि नहीं है कि हमारेमें कोई शारीरिक रोग, पीडा, व्याधि या दुर्बलता नहीं है । हाँ शारीरिक रूपसे स्वस्थ होनेको भी आंशिक अंशमें स्वस्थ माना जा सकता है । यहाँ बात हो रही है संपूर्ण रूपसे स्वस्थ होनेकी । इसका तात्पर्य है कि हम शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आत्मिक रूपसे स्वस्थ हों । इसे सर्वाङ्गीण स्वास्थ्य भी कहा जा सकता है ।

शारीरिक रोगकी अनुपस्थिति एक वांछनीय स्थिति है परन्तु यह स्वास्थ्यको पूर्णतया परिभाषित नहीं करता है । यह स्वास्थ्यके लिए एक कसौटी नहीं है और इसे अकेले स्वास्थ्य निर्माणके लिए पर्याप्त भी नहीं माना जा सकता है । स्वस्थ होनेका वास्तविक अर्थ अपने आप पर ध्यान केन्द्रित करते हुए जीवन जीनेके स्वस्थ तरीकोंको अपनाया जाना है ।

वस्तुतः स्वास्थ्यके अलग अलग आयाम हैं । (१) शारीरिक स्वस्थता (२) मानसिक स्वस्थता (३) बौद्धिक स्वस्थता (४) आत्मिक स्वस्थता । उपर्युक्त सभी आयाम यदि स्वस्थ होंगे तो हम संपूर्ण रूपसे स्वस्थ कहलायेंगे । संपूर्ण स्वस्थ होनेके लिए हमें प्रत्येक आयामके ऊपर ध्यान देना होगा । प्रत्येक विभागको फिट रखना होगा । वास्तवमें सुन्दर स्वास्थ्यकी कल्पना ही नहीं उसे प्राप्त करना ही संपूर्ण स्वस्थ होना है ।

इसको समझनेके लिए हमें सुरुआतसे समझना पड़ेगा । सर्वप्रथम हमारा आहार तय करता है कि हम अपने स्वास्थ्यके प्रति कितने जागरूक हैं । क्योंकि,

आहार शुद्धौ सत्त्व शुद्धि सत्व शुद्धौ ध्रुवास्मृति ।
स्मृति लब्धे सर्वग्रन्थिनां प्रिय मोक्षः ।। - छान्दोग्योपनिषद्

अर्थात् शुद्ध आहारसे अन्तःकरणकी शुद्धी होती है । अन्तःकरण शुद्धिसे बुद्धि निश्छल बन जाती है । निर्मल बुद्धि द्वारा संशय एवं भ्रम दूर होते हैं । तब मोक्ष भी सुलभ हो जाता है । यही संपूर्ण रूपसे स्वस्थ होनेका अर्थ है ।

कहनेका तात्पर्य यह है कि स्वस्थताका चतुर्थ सोपान आत्मिक स्वास्थ्यको प्राप्त करना हो तो भी शुद्ध आहार करना आवश्यक है ।

आहारके विषयमें शास्त्रोंकी मान्यताको आधुनिक आहार विशेषज्ञों तथा मनोवैज्ञानिकोंनें भी संपूर्णतया स्वीकार की है । सभीका यही कहना है कि संपूर्ण स्वास्थ्यके लिए आहारकी भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । क्योंकि आहारका मन पर सीधा प्रभाव पड़ता है । मनका पोषण आहारमें विद्यमान सूक्ष्म प्राणके अवशोषणके फलस्वरूप होता है । अतः इसकी दूषणता एवं सात्विकताके अनुरूप ही मनकी चंचलता अथवा स्थिरता निर्भर रहती है । जहाँ सात्विक, सुपाच्य एवं पोषक तत्त्वसे युक्त आहार मनको शुद्ध, सात्विक तथा स्थिर बना देता है वहीं राजसि एवं तामसि आहार मनको अस्थिर एवं व्याकुल । जब मन स्वस्थ होगा शरीर भी स्वस्थ होगा, बुद्धि भी स्वस्थ होगी, जब तन मन एवं बुद्धि तीनों स्वस्थ होंगे तो आत्मिक स्वास्थ्य भी प्राप्त होगा ।

अन्य उपस्थित सन्त-गुरुजनोंने पृथक पृथक विषयोंके ऊपर प्रवचन किया ।

पत्रकार परिषद : ३१ दिसम्बर २०२० सायं ४.३० से ६ बजे पत्रकार परिषद संपन्न हुआ । जिसमें शहरके लगभग ५० (प्रिन्ट मीडिया तथा इलेक्ट्रोनिक मीडिया) पत्रकारोंने भाग लिया । इस अवसर पर स्वामी श्री लक्ष्मणदेवजी महाराजने उपस्थित सर्वे महानुभावोंका स्वागत करते हुए सर्वप्रथम संस्था तथा संप्रदायके परिचयके साथ संस्था द्वारा चल रहे सेवा प्रकल्पोंकी जानकारी दी । तदुपरान्त डॉ. दिपेन पटेलने आलयम् रिहेब केरका परिचय तथा उद्देश्य बताया । आयुर्वेद विश्वविद्यालय जामनगरके उप कुलपति (V.C) ने आयुर्वेदका महत्त्व एवं अनिवार्यताके विषयमें जानकारी दी । अन्तमें परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने प्रासंगिक उद्बोधनके साथ सभीको आशीर्वचन प्रदान किये । कार्यक्रमका संचालन डॉ.जोगिन जोषीने किया ।

स्वास्थ्य परिसंवाद : ३१ दिसम्बर २०२० रात्रि ६ से ८ बजे परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीकी अध्यक्षता एवं निश्रामें स्वास्थ्य परिसंवादका महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम संपन्न हुआ । जिसमें विश्वस्तरीय डॉ. दिपेन पटेल (MS PT in Biokinesiology (USA) Founder Aalayam Reheb Care) ने प्रोजेक्टरके माध्यमसे शरीरमें होने वाले ज्वाइन्ट पेन, स्नायु पेन, साईटीका, सर्वाइकल स्पोन्डिलाटीस, फ्रोजन सोल्डर आदिके कारण तथा उसके उपचार विषयमें जानकारी दी । इस अवसर पर गुजरात राज्यके मंत्री श्री धर्मेन्द्रसिंह जाडेजा एवं विविध क्षेत्रोंके अनेक प्रतिष्ठित महानुभावोंकी उपस्थिति रही ।

आलयम् रिहेब केर (Aalayam Reheb Care) का शुभारंभ : ०१ जनवरी २०२१ के दिन प्रातः १० बजे श्री ५ नवतनपुरी धाम खीजडा मंदिर ट्रस्ट तथा डॉ. दिपेन पटेल (अहमदाबाद)के संयुक्त तत्त्वावधानमें श्री ५ नवतनपुरी धाम परिसरमें आलयम् रिहेब केरका मंगल शुभारंभ किया गया । यह जामनगरका प्रथम सेन्टर है जिसमें सुपथ मुल्यमें ज्वाइन्ट पेन, स्नायु पेन, साईटीका, सर्वाइकल स्पोन्डिलाटीस, फ्रोजन सोल्डर आदिका बिना अपरेशन बिना मेडिसिन उपचार किया जायेगा ।

जन्मोत्सव : दिनांक : ०१ जनवरी २०२० के नूतन प्रभातकी मंगल वेला मंगला आरतीसे प्रारंभ हुई । सेवापूजा एवं प्रार्थना पश्चात् जलपान एवं अल्पाहार कर मेहेर सागर, मूलमिलावा एवं धामवर्णन गायन द्वारा नूतन वर्षके प्रभातको मंगलमय बनाया गया । परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके प्राकट्यकी वधाई देने हेतु इस अवसर पर बडी संख्यामें विभिन्न स्थानोंसे सुन्दरसाथ पहुँचे थे ।

मंचका कार्यक्रम प्रातः ठीक ९.३० बजे प्रारंभ हुआ । सर्वप्रथम परम पूज्य आचार्य महाराजश्री, उपस्थित सन्त गुरुजन, ट्रस्टीजन तथा अनेक विशिष्ट महानुभावों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन हुए । परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीका स्वागत सभीने स्वागत भजन गायन कर किया । परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके आसनमें विराजमान होनेपर संगीतकार श्री राजकुमार उपाध्यायजीने भावविभोर होकर गुरुवन्दना प्रस्तुत की ।

पूजन : श्री ५ नवतनपुरी धामके पुजारी मनोरथजी तथा वयोवृद्ध भजनानन्दी सन्त पू. श्री रामदास हजुरीजीने सभी सन्तगुरुजन तथा सुन्दरसाथकी ओरसे प्रथम पूजन एवं वन्दन किया । तत्पश्चात् मन्दिरके छात्रोंने श्रीमद्भगवद्गीताके

श्लोक गायन कर परम पू. आचार्य महाराजश्रीकी वन्दना की । इस अवसर पर विभिन्न स्थानोंसे उपस्थित सन्तगुरुजनोंने गुरुजीका पूजन एवं वन्दन किया । उक्त समय श्री गणेश पाण्डे तथा स्वामी श्री चेतनणिजीने भावपूर्वक गुरुवन्दना समर्पण की ।

इसी क्रममें श्री ५ नवतनपुरी धामके ट्रस्टीजनोंमें आदरणीय **श्री नवीनभाई परीख, श्री मनसुखभाई संघाणी, श्री गौतमभाई ठक्कर, श्री अमित भावसार एवं श्रीमती शशी मित्तल**के साथ साथ संस्थाके विविध क्षेत्रके सभी ट्रस्टीजनोंने भावपूर्वक गुरुपूजन एवं वन्दन किया ।

मंगलाचरण, गुरुपूजन तथा वन्दनाके पश्चात् संचालकके रूपमें संत सभा तथा ट्रस्ट बोर्डकी ओरसे **स्वामी श्री १०८ लक्ष्मणदेवजी महाराज**ने प्रासंगिक उद्‌बोधन करते हुए कार्यक्रमको आगे बढाया । इस अवसर पर विविध स्थानोंसे उपस्थित श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके प्रतिष्ठित सन्तगुरुजनोंने प्रासंगिक प्रवचनके द्वारा और संगीतकारोंने अनुरागयुक्त भजन तथा वाणी गायन द्वारा अपना भाव परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके पावन चरणोंमें समर्पण किया ।

परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके पावन चरणोंमें शब्द पुष्प द्वारा अपना भाव व्यक्त करने वालोंमें संतजनोंमे **श्री १०८ नारायण स्वामीजी महाराज, महन्त : श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर-पीताम्बर पीठ धाम (असम), स्वामी श्री १०८ पुरुषोत्तमजी महाराज, महन्त श्री कृष्ण प्रणामी सेवाश्रम-शामलाजी । स्वामी श्री १०८ चन्दन सौरभजी महाराज, महन्त : श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर(कृष्ण कृपा धाम)द्वारका । स्वामी श्री १०८ बलराम सागरजी महाराज, महन्त : श्रीकृष्ण प्रणामी मन्दिर अहमदाबाद आदि मुख्य थे ।**

इस अवसर पर **परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने अपने वक्तव्यमें कहा,** ''आजका दिन अन्तरराष्ट्रिय नूतन वर्षके प्रथम दिनके रूपमें माना जाता है । इसलिए आजके मंगल प्रभातका स्वागत करनेके लिए पूरे विश्वमें अनेक प्रकारके कार्यक्रमोंका आयोजन होता है । किन्तु इस प्रकारके कार्यक्रम अधिकतर मनोरंजनात्मक होते हैं जिससे समाजका नैतिक स्तर और नीचे चला जाता है । जबकि भारतीय संस्कृतिमें ऐसे कार्यक्रमोंको धार्मिक स्वरूप दिए जानेकी व्यवस्था है जिससे मनोरंजनके साथ-साथ बुद्धिरंजन एवं आत्मरंजन भी होता है । इसलिए इन कार्यक्रमोंसे समाजका नैतिक स्तर ऊंचा उठता है ।

आप सभीने नूतनवर्षकी शुभकामनाओंके साथ जन्मदिनकी वधाइयाँ दी है। इसके लिए सभीको धन्यवाद। हमारा जीवन परमात्मा द्वारा प्रदत्त है इसलिए हमें इस जीवनको परमात्माके कार्योंमें लगाकर सार्थक बनाना चाहिए। परमात्माने अपने कार्यके लिए हमें निमित्त बनाया है तो यह हमारा परम सौभाग्य है। इस प्रकार सोचकर कार्य करेंगे तो हमारे मनमें अहंकार नहीं अपितु विनम्रता आएगी। अहंकारसे बुद्धि भ्रष्ट होती है। और बुद्धिभ्रष्ट होनेसे पतन होता है। यदि हम स्वयंको परमात्माके प्रति समर्पित कर उनके कार्योंको आगे बढ़ाना अपना कर्तव्य समझेंगे तो हम समाजसेवाके कार्योंको करते हुए आनन्दित होंगे।

हम सभी सुन्दरसाथ हैं। सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज द्वारा प्रदर्शित मार्गपर चलनेवालोंको सुन्दरसाथ कहा जाता है। सुन्दरसाथका भाव भी सुंदर होना चाहिए, वाणी, व्यवहार एवं आचरण भी सुन्दर होने चाहिए। सुन्दरसाथमें परस्पर पारिवारिक अथवा कौटुम्बिक भावना होनी चाहिए। परिवार वह है जो एक दूसरेके सहयोगसे चलता है। इसीलिए सुन्दरसाथमें भी एक दूसरेको सहयोग पहुँचानेकी भावना होनी चाहिए। किसीको नीचा दिखाकर कोई महान (ऊँचा) नहीं बन सकता है। सुन्दरसाथका दिल प्रेम सेवासे ओतप्रोत होना चाहिए। सुन्दरसाथको श्यामाजीका अंग माना है। जैसे शरीरके अंग अंग एक दूसरेका सहयोग करते हैं इसी प्रकार सुन्दरसाथको भी परस्पर मिल कर कार्य करना चाहिए। इस नूतन वर्षमें हम यह संकल्प करें।

इस नयें वर्षको नई उम्मीदें, नयें सपने, नये लक्ष, नयें नयें आईडियाजके साथ स्वागत किया जाए। क्योंकि हमें विश्वास है कि नूतन वर्षके प्रथम प्रभातको यदि उत्साह, उमंग एवं खुशी खुशी स्वागत करें तो पूरा वर्ष इसी तरह उत्साह एवं उमंगके साथ अच्छे अच्छे कार्य करते हुए संपन्न होगा। नया साल नई शुरुआको दर्शाता है और हमेशा आगे बढ़नेकी सीख देता है। पुराने सालमें हमने जो भी किया, सीखा उसमें सफल या असफल हुए उससे सीख लेकर एक नई उम्मीदके साथ आगे बढ़ना चाहिए।

जिस प्रकार हम पुराने वर्ष समाप्त होनेपर दुःखी नहीं होतें हैं किन्तु नयें सालका स्वागत बड़े उत्साह और खुशीके साथ करते हैं, उसी तरह जीवनमें भी बीते हुए समयको लेकर हमें दुखी नहीं होना चाहिए। जो बीत गया उसके बारमें सोचनेकी अपेक्षा आने वाले अवसरोंको अच्छी तरहसे स्वागत करें और उसके माध्यमसे अपने जीवनको अधिक बेहत्तर बनानेकी कोशिश करें।

गत वर्ष २०२० पूरे विश्वके लिए अच्छा नहीं रहा । कोरोना संक्रमणके कारण समग्र विश्व एक प्रकारसे ठप-सा हो गया । दुनियाभरमें आवागमन, यात्रा-पर्यटन सभी बन्द रहे । भारतमें भी इसका असर व्यापक रूपसे हुआ । अधिकांश व्यापार, व्यवसाय पूर्णरूपसे बन्द हो गए । करोंडौं लोगोंकी नोकरी चली गई । करोडौं लोग मारे गये । अनेक सुन्दरसाथके धामगमनका कारण भी कोरोना बना । अभी भी इसका असर कम नहीं हो रहा है । अब तो नयाँ प्रकारका और भयाभव वायरस फैलनेकी बात सामने आ रही है । किन्तु हमें इससे डरने व घबरानेकी आवश्यकता नहीं है, हाँ जरुर हमें पहलेसे अधिक सचेत होकर रहनेकी आवश्यकता है ।

कोरोना काल यों तो सभी प्रकारसे नुकशानदायी एवं नकारात्म है, फिर भी यदि इसमें सकारात्मक पहलुको देखनेका प्रयत्न करें तो कुछ न कुछ सकारात्मकता भी नजर आयेगी । वह यह है कि हम सभीको इस संकट समयने अपनी जीवन पद्धतीको सही बनानेमें प्रेरित और प्रोत्साहित किया ।

परापूर्व कालसे ही जो बात हमारे प्राचीन वैज्ञानिक(ऋषि-महर्षियों) ने कही थी उसी बातके प्रति कोरोनाके कारण सभीका ध्यानाकर्षण हुआ ।

- हमें प्रकृतिके अनुरूप चलना चाहिए । प्रकृति विरुद्ध कार्य होता है तो प्रकृति कभी भी उसका हिसाब ले लेती है ।
- मनुष्य सर्व शक्तिमान नहीं है, सर्वशक्तिमान तो एक परमात्मा हैं, वे चाहेंगे तो किसीको निमित्त बनाकर कुछ भी करवा सकते हैं ।
- हमें सदैव परमात्माके ऊपर आस्था बनाये रखनी चाहिए ।
- हमें स्वच्छ, स्वस्थ तथा सात्विक आहार करना चाहिए ।
- सात्विक व पौष्टिक आहार एवं व्यायाम द्वारा रोगप्रतिकारात्मक शक्तिको बढायें ।
- आधुनिक मेडिशिनकी अपेक्षा हमारे रसोई घरमें प्राचीन समयसे प्रयोग होनेवाली अधिकांश वस्तुओं (हलदी, अजवाईन, जीरा, धनिया, सूंठ, काली मिर्च, मेथी, लवींग, अदरख, तज आदि)का योग्य सेवन करें जिससे हमारे अन्दर रोगसे लड़नेकी शक्तिमें अभिवृद्धि होती है ।
- ताजे फल एवं ताजा शाक सब्जियाँ रोग प्रतिकारात्मक शक्तिको बढाते हैं ।
- अपना हाथ पैर सदा स्वच्छ रखें । बार बार धोयें । हाथसे बार बार नाक,

मुख, कान, आँख या अन्य त्वचाओंका स्पर्ष न करें । यदि अति आवश्यक हो तो रूमाल या किसी कपडेसे हाथको लपेटकर स्पर्श करें ।

- भोजनसे पूर्व या भोजन पश्चात् अच्छी तरह रगड रगड कर हाथको धोयें ।
- बहुत आवश्यक न हो तब तक किसी भी चीज-वस्तुओंको हाथसे स्पर्श करनेसे बचें ।
- बाहरके भोजनको एवोइड करें । घरका भोजन करें ।
- कमसे कम दिनमें एक समयका भोजन परिवारके साथ मिलकर करें ।
- भोजन शुद्ध, ताजा व स्वच्छ हो इसका पूरा ध्यान दें ।
- हर किसीसे मिलते हुए हाथ मिलाने व गले मिलनेकी अपेक्षा प्रणाम व नमस्कार करें । यही हमारी प्राचीन पद्धती है ।
- आत्मबल प्रबल बनानेके लिए प्रार्थना एवं ध्यान करें ।
- मात्र भौतिक सम्पत्ति नहीं आध्यात्मिक संपत्ति भी आर्जन करें ।
- आज सभीको व्यस्त कहलाने व दिखानेमें रुचि होती है । ऐसेमें हम परमात्मा व परिवारको भी भूल जाते हैं । कितना भी व्यस्त हों परिवार व परमात्माको कभी न भूलें ।

अन्तमें मेरी शुभकामाना है कि आप सभीके लिए यह नूतन वर्ष अधिक सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्रदायक बने । आप सभी भौतिक उन्नतिके साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नतिके शिखर सैर करे । श्री राजजीकी भक्तिमें उत्तरोत्तर वृद्धि हो । हम सभीके मनमें समग्र विश्वके प्रति सद्भाव जागृत हो । वसुधैव कुटुम्बकम्की भावनासे हमारा जीवन ओतप्रोत हो अस्तु ।''

परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके आशीर्वचन पश्चात् सभी सुन्दरसाथने पूज्य आचार्य महाराजश्रीके चरणोंमें श्रद्धा सुमन अर्पण करते हुए अपना भाव व्यक्त किया । तत्पश्चात् सुन्दरसाथने भोजन-प्रसाद ग्रहण कर अपने-अपने गृहकी ओर प्रस्थान किया ।

इस प्रकार श्री ५ नवतनपुरी धाममें चतुर्दिवसीय सत्संग सभाके साथ परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके जन्मोत्सव सुन्दर ढंगसे सम्पन्न हुआ । समग्र कार्यक्रमका लाईव प्रसारण **navtanpuri aap** प्रणामी टीवी द्वारा किया गया ।

-संत सभा

गुरु वन्दना

(राग – मैली चादर औढके)

गुरुवर मुझसे भूल हुई है कैसे तुमको सुनाऊं ।.....
सतगुरु मुजसे पाप हुए हैं सबसे कह न पाऊं ।
दर्शन तेरे करने जब मैं नौतन पुरीमें आई ॥ १

मतलबसे हर बार ही मैंने तुझको शीश नमाया ।
मन दरपन मैला है मेरा कैसे आंख मिलाऊं ॥ २

आजतक मैं छोड सकी ना झूठे जगकी माया ।
जीवन संध्या निकट है मेरी निर्बल होती काया ॥ ३

साथ न देती सांसे मेरी नौतन नीर बहाऊं ।
टूट गये सब रिश्ते नाते याद तभी तूं आया ।
केवल अब तो तेरा सहारा जग है सारा पराया ॥ ४

गुरु द्वारको छोड़ अब मैं, कौन द्वार पे जाऊँ ।
सुन्दरसाथको साथमें लेकर गुरुके द्वारे आई ।
चरनोमें मैं शीश झूकाउ आंखोमें भर पानी ।
रो रोकर ये अंगना पुकारे चरणोंका हो सहारा ॥ ५

– गीताबेन ठक्कर, मुंबई

● **धामगमन :** प्रणामी परमार्थ सेवा ट्रस्ट, चण्डिगढके खजांची सुन्दरसाथ श्री बलवीरसिंह कौशलजीका धामगमन हो गया है । उनकी आत्मिक शान्ति हेतु उनके सुपुत्र श्री सौरभ कौशल एवं परिवारकी ओरसे सेवा श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिकाकी साहित्य सेवामें रु.२१००/– की सेवा प्रदान की है ।
श्री बलवीरसिंहजीकी आत्माको श्री राजश्यामाजी अपने चरणोंमें सदैव स्थान प्रदान करें । परिवारको दु:ख सहन करनेकी शक्ति प्राप्त हों इन्हीं शुभकानाओंके साथ प्रणाम ।

- **धर्मप्राण सुन्दरसाथजी, नवतनपुरी धाम द्वारा आयोजित कथा, प्रवचन, भजन कीर्तन आदि धर्मके विभिन्न कार्यक्रमोंका लाभ लेनेके लिए Facebook तथा Youtube में प्रणामी टीबी (Pranamitv) देंखें ।**
- **Android में Google play और Apple में App Store द्वारा krishna pranami App डाउनलोड करें ।**

लकडाउनके समयमें
लाखों लोगोंको भोजन प्रसादकी सेवा

सुन्दरसाथजी, आप सभीको ज्ञात है कि कोविड-१९ के संक्रमणको रोकनेके लिए सरकारने गत वर्ष २४ मार्चसे देशमें संपूर्णरूपसे लकडाउन किया था। ३ फेसमें लगभग २ महिने पर्यन्त लकडाउन चला। लकडाउनका कालखण्ड सभी नागरिकोंके लिए कष्टप्रद था परन्तु सबसे अधिक कष्ट एवं दुख प्रति दिन मजदुरी करके जीवन गुजारा करने वाले मजदूर वर्गके लिए था।

यह इसीलिए की उन्हें प्रतिदिन मजदूरी करके स्वयं तथा परिवारका भरण पोषण करना करना था। जब लकडाउनके कारण कल-कारखाना-कन्ट्रक्शन आदिके संपूर्ण कार्य बन्द हो गए उस समय मजदूर लोगोंके पास दो समयका भोजन जुटानेमें बहुत परेशानी होने लगी।

ऐसे समयमें श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके आचार्यपीठ-श्री ५ नवतनपुरी धाम द्वारा जामनगरके लाखों मजदुरोंको भोजन करवाया गया। प्रति दिन मन्दिरके भोजनालयमें भोजन बनाकर शहर तथा गाँवके अलग अलग स्थानोंमें ले जाकर जरुरतमंदोंको सुबह एवं साम दोनों समय भोजन करवाया गया। भोजनमें दाल-भात-शाक-रोटी-छाश-एवं मिठाई आदि विशेष होते थे।

प्रति दिन सुबह १२०० से १४०० लोग एवं साम को ८०० से १००० लोगोंको इसतरह ६० दिन पर्यन्त भोजन करवाया गया।

इसके साथ साथ-जैसे ही अनलक होने लगा-मजदूर वर्ग रेल एवं बसके द्वारा अपने अपने घर लौटने लगे, उस समयमें दूर दूर जाने वाले हजारों मज दुरोंको भोजन मार्गके लिए भोजन प्याकेट बनाकर पहुंचाया गया।

सुन्दरसाथजी, इस प्रकारकी सेवामें अनेक सुन्दरसाथने तन, मन धनसे अपना योगदान प्रदान किया। यही तो सबसे बडी सेवा है।

इस कार्यमें निरन्तर दिन रात प्रत्यक्ष रूपसे सेवामें जुटने वाले मन्दिरके सन्तजन, सेवकजन तथा आर्थिक अनुदान देकर सेवा यज्ञमें परोक्ष रूपसे अपना योगदान देने वाले सभी सुन्दरसाथको बहुत बहुत धन्यवाद। धर्म एवं धामके प्रति आप सभीका भाव प्रशंसनीय है। सभीके ऊपर श्री राजश्यामाजीकी कृपा बनी रहे, श्री ५ नवतनपुरी धामके आशीर्वाद आप सभीके साथ है। प्रणाम।

- आचार्य कृष्णमणि महाराज

श्री कृष्ण प्रणामी धर्मकी ओरसे
पी.एम.केर फंडमें २.३० करोड प्रदान

सुन्दरसाथजी, कोरोनाके साथ जंग जितनेके लिए आदरणीय प्रधामंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजीके आह्वान पर भारत सरकार द्वारा पी.एम. केर फंड बनाया गया था। जिसमें देश विदेशके करोडों लोगोंने एक होकर सहयोग राशि प्रदान की।

श्री कृष्ण प्रणामी धर्मकी ओरसे श्री ५ नवतनपुरी धामके मार्गदर्शनमें लगभग दो करोड तीस लाख रूपयेंकी सेवा राशि प्रदान की गई। जिसमें स्वामी श्री १०८ सदानन्दजी महाराज–श्रीकृष्ण प्रणामी मन्दिर दिल्लीका सर्वाधिक योगदान रहा। इसी प्रकार श्री ५ महामंगलपुरी धाम सूरतके आचार्य श्री १०८ सूर्य नारायणदासजी महाराजने भी बहुत बडा योगदान दिया।

ऐसी सुन्दर एवं महत्त्वपूर्व सेवा सभी सुन्दरसाथजीके साथ एवं सहयोगसे ही संभव हुई। उपरोक्त सेवा कार्यमें योगदान प्रदान करने वाले सभी सन्तगुरुजन तथा देश–परदेशके सभी सुन्दरसाथजीको बहुत बहुत धन्यवाद।

–आचार्य कृष्णमणि महाराज

सेवा बदल धन्यवाद

सुन्दरसाथजी, हम सभीके अहोभाग्यसे गत वर्ष (२०२०) में श्री ५ नवतनपुरी धाममें स्वयं परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने वीतक कथा की। देश–परदेशमें रहने वाले हजारों सुन्दरसाथनें आचार्य महाराजश्रीके मुखारविन्दसे एक महिना पर्यन्त निष्ठापूर्वक वीतकका रसपान किया।

कोरोनाके कारण एक स्थानमें अधिक संख्यामें एकत्र होकर कार्यक्रम करना संभव नही था। अतः सभीने अपने अपने घरसे ही कथाका लाभ प्राप्त किया।

प्रति वर्ष श्री ५ नवतनपुरी धाममें वीतक कथा पश्चात् श्रीमद्भागवत् कृष्ण कथाका सुन्दर आयोजन होता है। इस बार स्वामी श्री लक्ष्मणदेवजी महाराजने सुन्दर एवं सरल शैलीमें श्रीमद्भागवत कथा की। सुन्दरसाथजीने प्रेमपूर्वक कथाका आनन्द प्राप्त किया।

वीतक एवं भागवतकथाके समय सुन्दरसाथजीने अलग अलग प्रकारकी आर्थिक सेवायें प्रेषित की थी। सेवा बदल आप सभीको लाख लाख धन्यवाद।

संत सभा–श्री ५ नवतनपुरी धाम

श्री ५ नवतनपुरी धामकी-विविध सेवा

- **पारायण**

१. एक दिवसीय (गोटा)	–	२५००/–
२. त्रि-दिवसीय (अखण्ड)	–	५१००/–
३. सात दिवसीय (साप्ताहिक)	–	२१००/–
४. महेर सागरके १०८ पाठ	–	११००/–
५. विरहके ६ प्रकरणोंके १०८ पाठ	–	५५१/–

- **श्री राजश्यामाजीके लिए भोग-आरतीकी सेवा**

१. राजभोग (दैनिक)	–	११००/–
२. बालभोग (दैनिक)	–	५००/–
३. स्थायी तिथि	–	११०००/–
४. अखण्ड दीपककी सेवा (साप्ताहिक)	–	११,००
५. पाँच आरतीके लिए घीकी सेवा (मासिक)	–	११,००

- **गाय दान सेवा**

दूध देनेवाली गाय (एक)	–	१५,०००/–
छोटी बछडी (एक)	–	७, ५००/–
गौशालाका एक दिनका पूरा खर्च	–	११०००/–

- **रसोई तथा अल्पाहार सेवा**

१. पक्की रसोई-भोजनकी बानगियोंके आधार पर खर्च तय होता है।

२. सुनिश्चित पक्की रसोई(मेवा मिष्टान्न सहित)	–	११०००/–
३. सुनिश्चित सादी रसोई (मेवा मिष्टान्न बिना)	–	५१००/–
४. अल्पाहार तथा जलपान (सुबहका नास्ता) चाय, दूध तथा प्रति दिन भिन्न परिकार)	–	२१००/–

- **श्री कृष्ण प्रणामी औषधालय**

१. मेडिकल (शिबिर) केम्प(एक कैम्प)	–	११,०००/–
२. औषधालयकी सेवा (प्रति दिन)	–	११,००/–
साधु, सन्त तथा विद्यार्थी सहाय कोष न्यूनतम	–	११,००/–
मंदिरके शिखर पर ध्वजा चढानेकी सेवा	–	५१००/–
श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका प्रकाशन सेवा	–	३०,०००/–

सदस्यता शुल्क वार्षिक : १५०/– । १५ वर्षीय) –१५००/–

श्री ५ नवतनपुरी धाममें आचार्य महाराजश्रीके जन्मदिनके शुभ प्रसंग पर आलयम रीहेब केर (Aalayam Rehab Care)का उद्घाटन ।

:: सौजन्य ::

भुज (कच्छ) निवासी धर्मपरायण अत्यंत प्रेमी सुन्दरसाथ श्रीमति हंसाबेन भगवानजीभाई अनमका दिनांक १७/११/२०२० के दिन धामगमन हो गया हैं। उनकी आत्म शान्ति हेतु श्री भगवानजीभाई तुलसीदास अनम तथा परिवारकी और से पत्रिकाके इस अंकके प्रकाशनकी आंशिक सेवा प्राप्त हुई है ।

पूर्णब्रह्म परमात्मा अनादि अक्षरातीत श्रीकृष्णजी धामधनी श्री राजजीसे प्रार्थना करते हैं कि वे उनको अपने चरणोंमें स्थान दें ।

RNINO.GUJBIL/2006/18311
Postel Reg.No.Jam/GJN-1/2020-21
Validity : upto 31-12-2023
Date of Publication :10th of every month
Date of posting :16th of every month
Subscription : AnnualRs.150/-15 Years Rs.1500
No.Of Pages:36

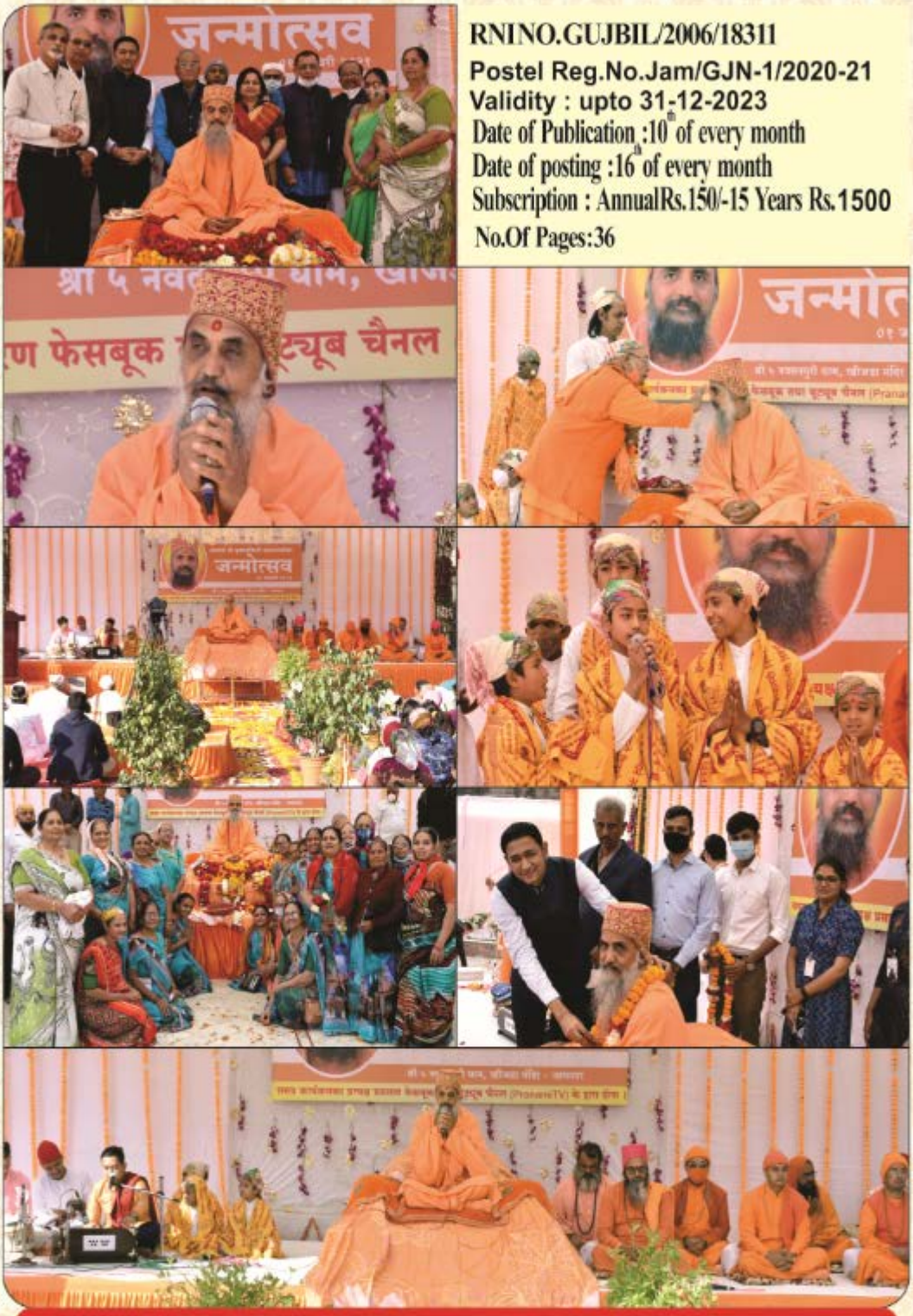

श्री कृष्ण प्रणामी धर्माचार्य अनन्तश्री विभूषित जगद्गुरु आचार्य श्री कृष्णमणिजी महाराजश्रीके जन्मोत्सवके दृश्य ।